प्रकाशितवाक्य

1 यीशु मसीह का वह ज्ञान, जिसे
परमेश्वर पिता ने उन्हें[a] इसलिए दिया
कि वे, अपने सेवकों को उन बातों को
दिखाएँ जो जल्द और अचानक होने वाली
हैं। उन्होंने अपना स्वर्गदूत भेज कर इन्हें
अपने सेवक यूहन्ना को बताया, 2 जिस ने
परमेश्वर पिता के जिस वचन को सुना और
यीशु मसीह के बारे में जो कुछ देखा उसके
बारे में गवाही दी। 3 आशीषित वह व्यक्ति
है जो इन भविष्यद्वाणी की बातों को पढ़ता,
सुनता और मानता है, क्योंकि समय निकट
है।

4 यूहन्ना की ओर से, एशिया की सात चर्चों
को, जो थे, जो हैं, और जो आने वाले हैं,
तथा उन सात आत्माओं की तरफ़ से जो
उनके राजासन के सामने हैं, तुम पर कृपा
और शान्ति हो। 5 साथ ही ये तुम्हें यीशु मसीह
से मिलें जो सच्चे गवाह, मरे हुओं से जी
उठने वालों में पहलौठे, तथा पृथ्वी के सभी
शासकों के प्रधान हैं। वह हम से प्रेम करते
हैं और उन्होंने अपने खून से हमारे गुनाहों
को धो दिया, 6 उन्होंने हमें राजा और अपने
परमेश्वर पिता के लिए याजक[b] बनाया,
उन्हें महिमा और प्रभुता सदा सर्वदा मिलती
रहे। ऐसा ही हो।

7 देखो! वह बादलों के साथ आ रहे हैं। हर
एक आँख उन्हें देखेगी, यहाँ तक कि वे लोग
भी जिन्होंने उन्हें मार डाला था। दुनिया के
सभी लोग उनके कारण बिलख-बिलख कर
रोएँगे। हाँ, ऐसा ही होगा।

8 स्वामी परमेश्वर, जो हैं, जो थे, जो आने
वाले हैं और जो सर्वशक्तिमान हैं, यह कहते
हैं, “मैं अल्फ़ा और ओमेगा हूँ, पहला और
आखिरी हूँ”।

9 मैं यूहन्ना, तुम्हारा भाई यीशु मसीह की
वजह से दुख, और धीरज में तुम्हारे साथ
भागीदार हूँ। मैं पतमुस नामक टापू में
परमेश्वर के वचन और यीशु की गवाही
देने की वजह से कैदी था। 10 मैं सप्ताह
के पहले दिन आत्मा से भर गया और मैंने
अपने पीछे तुरही की आवाज़ के समान एक
बड़ा शब्द सुना। 11 जो कह रहा था कि मैं
अल्फ़ा और ओमेगा, पहला और आखिरी
हूँ और जो कुछ तुम देखते हो, उसे किताब
में लिख कर आशिया की सातों मण्डलियों
- इफ़िसुस, स्मुरना, पिरगमुन, थुआतीरा,
सरदीस, फ़िलादेलफ़िया और लौदीकिया को
भेज दो।

12 तब मैंने पलट कर बोलने वाले को
देखना चाहा। जैसे ही मैं मुड़ा, मैंने सोने
के सात दीपदानों को देखा। 13 उन सात
दीपदानों के बीच मैंने ‘मनुष्य के पुत्र’ की
तरह किसी को देखा, जो पैरों तक चोगा
पहिने और छाती पर एक सुनहरा पट्टा बाँधे
हुए थे। 14 उनका सिर और बाल बर्फ़ की
तरह सफ़ेद और ऊन की तरह थे। उनकी
आँखें आग की लपटों की तरह थीं। 15 उनके
पैर भट्टी में तपा कर चमकाए हुए पीतल की
तरह थे। उनकी आवाज़ महासागर की लहरों
की तरह थी। 16 वह अपने दाहिने हाथ में
सात तारों को लिए हुए थे और उनके मुँह से
दोधारी तेज़ तलवार निकल रही थी। उनका
चेहरा दोपहर के सूरज की तरह चमक रहा
था।

---

[a] **1.1** यीशु को [b] **1.6** पुरोहित

17 जब मैंने उन्हें देखा तो मुर्दे की तरह
उनके पैरों पर गिर पड़ा। तब उन्होंने अपना
दाहिना हाथ मेरे ऊपर रख कर मुझ से कहा,
“डरो मत, मैं ही पहला और आखिरी हूँ।
18 मैं वह हूँ जो मर गया था, लेकिन अब
हमेशा-हमेशा तक ज़िन्दा हूँ। ऐसा ही हो! मौत
और अधोलोक की चाभियाँ मेरे पास हैं।
19 इसलिए जो बातें तुमने देखी हैं, जो बातें
हो रही हैं और जो इसके बाद होने वाली
हैं, उन सभी को लिख लो। अर्थात् उन सात
तारों का भेद जो तुमने मेरे दाहिने हाथ में देखे
थे। 20 उन सात दीपदानों का मतलब वे सात
तारे सातों मण्डलियों[a] के दूत हैं, और वे सात
दीपदान सात मण्डलियाँ हैं।”

2 इफ़िसुस की मण्डली के स्वर्गदूत[b] को
यह लिखोः वह जो अपने दाहिने हाथ में
सात तारे लिए है और वह जो सात सोने के
दीपदानों के बीच चलते-फिरते हैं, यह कहते
हैः
2 ‘मैं तुम्हारी मेहनत के कामों, और धीरज
को जानता हूँ और यह भी कि तुम दुष्टों को
सहन नहीं कर सकते। तुमने उन लोगों को
परखा और झूठा पाया है जो प्रेरित होने का
दावा करते हैं, लेकिन हैं नहीं। 3 तुम में धीरज
रखने की ताकत है और तुमने मेरे नाम के
लिए मेहनत की और निराश नहीं हो गए।
4 लेकिन मुझे तुम्हारे खिलाफ़ यह शिकायत
है कि तुमने मेरे लिए अपना पहला प्यार छोड़
दिया है। 5 इसलिए याद करो कि तुम अपने
पहले प्यार से कितनी दूर चले गए हो। मन
बदलो और पहले कामों को करो - नहीं तो मैं
जल्द ही तुम्हारे पास आऊँगा। अगर तुम मन
न बदलो तो मैं तुम्हारे दीपदान को उसकी
जगह से हटा दूँगा। 6 लेकिन अच्छी बात है
कि तुम नीकुलइयों के कामों से नफ़रत करते
हो, जिन से मैं भी नफ़रत करता हूँ।
7 जो सुनना चाहे, वह सुने कि पवित्र आत्मा
मण्डलियों से क्या कहता हैः जो जीत हासिल
करे उसे मैं ज़िन्दगी के पेड़ में से, जो परमेश्वर
पिता के स्वर्गलोक के मध्य में है, खाने को
दूँगा।
8 स्मुरना की मण्डली के संदेशवाहक को
यह लिखोः जो पहले और आखिरी हैं, जो
मर गए थे और अब जी उठे हैं, यह कहते हैं,
9 “मैं तुम्हारे काम, और दुख और गरीबी
को जानता हूँ - लेकिन तुम अमीर हो। वे
जो अपने आपको यहूदी कहते हैं, लेकिन
हैं नहीं, लेकिन शैतान की जमायत हैं, उनकी
निन्दा को भी मैं जानता हूँ। 10 जो दुख तुम
सहने वाले हो, उन से मत डरना। देखो,
शैतान तुम में से कुछ लोगों को जेल में डाल
देगा, ताकि तुम परखे जाओ और तुम्हें ‘दस
दिनों’ तक क्लेश सहना पड़ेगा। जान देने तक
अपने विश्वास में बने रहना - तब मैं तुम्हें
ज़िन्दगी का ताज[c] दूँगा।
11 जो सुनना चाहे वह सुन ले कि आत्मा
मण्डलियों से क्या कहता है। जो जीत हासिल
करे, उसे दूसरी मौत से कोई नुकसान नहीं
पहुँचेगा।
12 पिरगमुन की मण्डली के संदेशवाहक
को यह लिखोः यह संदेश उनकी तरफ़ से
है जिन के पास तेज़ दोधारी तलवार है।
13 मैं तुम्हारे कामों को जानता हूँ, और मुझे
यह मालूम है कि तुम वहाँ रहते हो जहाँ शैतान
का अड्डा है। तुमने मेरे नाम पर विश्वास
रखना जारी रखा है। जब मेरा विश्वासयोग्य
गवाह अन्तिपास तुम्हारे बीच में मारा गया,
जहाँ शैतान का निवास है, तब भी तुमने मेरा
इन्कार नहीं किया।

[a] **1.20** चर्च [b] **2.1** संदेशवाहक [c] **2.10** जीवन का मुकुट

14 फिर भी मेरे पास तुम्हारे खिलाफ़ कुछ
शिकायतें हैं। तुम्हारे बीच में कुछ ऐसे लोग
हैं जो बिलाम की तरह हैं। क्योंकि बिलाम
ने बालाक को यह सिखाया था कि इस्राएली
लोग मूरतों का प्रसाद खाने और व्यभिचार
करने से ठोकर खाएँ। 15 इसी तरह तुम्हारे
बीच कुछ लोग नीकुलइयों की शिक्षा मानने
वाले हैं जिस से मुझे नफ़रत है। 16 इसलिए
अपना मन बदलो, नहीं तो मैं जल्द ही आकर
अपने मुँह की तलवार से उनके खिलाफ़
लड़ूँगा।
17 जो सुनना चाहे वह सुने कि आत्मा
मण्डली[a] से क्या कहना चाहता है। जो जीत
हासिल करे, उसे मैं छुपे हुए मन्ना में से दूँगा।
एक सफ़ेद पत्थर भी दूँगा जिस पर एक नया
नाम खुदा हुआ होगा। इस नाम को पाने वाले
के अलावा उसे और कोई नहीं जानेगा।"
18 थुआतीरा की मण्डली के संदेशवाहक
को लिखोः परमेश्वर के बेटे जिन की आँखें
आग की लपट और पैर चमकते पीतल के
समान हैं, यह कहते हैः
19 "मैं तुम्हारे काम, प्यार, विश्वास, सेवा
और धीरज को जानता हूँ और यह कि तुम्हारे
अभी के काम - पुराने कामों से बढ़ कर हैं।
20 लेकिन तुम्हारे खिलाफ़ मुझे यह
शिकायत है कि तुम उस स्त्री इज़ेबेल को
अपने बीच में रहने देते हो। वह अपने
आपको भविष्यद्वक्तिन कह कर मेरे लोगों
को व्यभिचार करने और मूरतों का प्रसाद
खाने के लिए सिखाते हुए भटकाती है।
21 मैंने उसे मन बदलने का मौका दिया,
लेकिन वह अनैतिक चाल-चलन छोड़ना
नहीं चाहती। 22 देखो, अगर वह अपने सारे
बुरे कामों को नहीं छोड़ेगी, तो मैं उस औरत
को बीमारी के बिस्तर पर डालूँगा और जो
उसके साथ व्यभिचार करते हैं, उन सब को
भारी पीड़ा में डालूँगा। 23 मैं उसके सभी
बच्चों को महामारी से मारूँगा और सारी
मण्डलियाँ जान जाएँगी, कि मनों और दिलों
को जाँचने वाला मैं ही हूँ। मैं तुम में से हर
एक को उसके कामों के मुताबिक बदला
दूँगा। 24 लेकिन मैं थुआतीरा के बाकी लोगों
से कहता हूँ, जो इस शिक्षा को नहीं मानते
और उन बातों को जिन्हें शैतान की गहरी
बातें कहते हैं, नहीं समझते। मैं तुम पर और
अधिक भार नहीं डालता, 25 फिर भी जो
कुछ तुम्हारे पास है, उसे मेरे आने तक
मज़बूती से थामे रहो।
26 जो जीत हासिल करे और जो मेरे कामों
को आखिर तक करता रहे, उसे मैं तमाम
देशों पर अधिकार दूँगा। 27 वह उन पर लोहे
के राजदण्ड से शासन करेगा उन्हें कुम्हार के
मिट्टी के बर्तन के समान चकनाचूर करेगा,
जैसे कि मैंने भी ऐसा ही अधिकार अपने पिता
से पाया। 28 उसे मैं सुबह का तारा दूँगा। 29 जो
सुनना चाहे वह आत्मा की सुन ले और समझ
ले कि आत्मा मण्डलियों से क्या कहता है।"

3 सरदीस की मण्डली के संदेशवाहक को
लिखोः जिस के पास परमेश्वर की सात
आत्माएँ और सात तारे हैं, वह यह कहते
हैः मैं तुम्हारे कामों को जानता हूँ, कि तुम
ज़िन्दा तो कहलाते हो, लेकिन हो मरे हुए।
2 जाग जाओ, और जो बातें बाकी बच गई हैं,
और मिटने पर हैं उन्हें मज़बूत करो, क्योंकि
मैंने तुम्हारे किसी काम को परमेश्वर की दृष्टि
में सही नहीं पाया। 3 इसलिए याद करो कि
तुमने किस तरह की शिक्षा पाई थी, उसी में
बने रहो और मन बदलो। इसलिए अगर तुम
न जागो तो मैं चोर की तरह आऊँगा और तुम

[a] 2.17 चर्च

जान भी न पाओगे, कि मैं किस वक्त तुम्हारे
पास आ जाऊँगा।
4 लेकिन सरदीस में तुम्हारे पास थोड़े लोग
ऐसे भी हैं जिन्होंने अपने कपड़े गंदे नहीं
किए हैं। वे सफ़ेद कपड़े पहने हुए मेरे साथ
चलेंगे, क्योंकि वे इस लायक हैं। 5 जो जीत
हासिल करे, उसे इसी तरह के कपड़े पहनाए
जाएँगे। मैं उसका नाम जीवन की पुस्तक
में से न मिटाऊँगा, लेकिन अपने पिता और
उनके स्वर्गदूतों के सामने उसका नाम मान
लूँगा। 6 जो सुनना चाहे वह सुन ले कि आत्मा
मण्डलियों से क्या कहता है।
7 फ़िलादेलफ़िया की मण्डली के
संदेशवाहक को लिखोः जो पवित्र और सच्चे
हैं और जिन के पास दाऊद की चाभी है -
जिसे वह खोलते हैं उसे कोई बन्द नहीं कर
सकता - वह यह कहते हैः
8 मैं तुम्हारे कामों को जानता हूँ। देखो, मैंने
तुम्हारे लिए एक दरवाज़ा खोला हुआ है जिसे
कोई बन्द नहीं कर सकता। हालाँकि तुम्हारी
ताकत कम है फिर भी तुमने मेरे वचन[a] को
माना है और मेरे नाम का इन्कार नहीं किया।
9 देखो! जो शैतान की जमायत हैं और अपने
आपको यहूदी कहते हैं जब कि हैं नहीं, वे
झूठ बोलते हैं। मैं उन्हें मजबूर करूँगा कि
वे आकर तुम्हारे पैरों पर झुकें और जानें कि
मैंने तुम से प्यार किया है। 10 इसलिए कि
तुमने मेरे धीरज के वचन को माना है, मैं
भी तुम्हारे परखे जाने के समय में तुम्हें बचा
रखूँगा, अर्थात् वह न्याय का समय जो सारी
दुनिया पर आने वाला है, ताकि इस में सभी
रहने वाले परखे जाएँ।
11 मैं अचानक आने वाला हूँ, जो कुछ
तुम्हारे पास है उसमें बने रहो कि कोई तुम्हारा
ताज तुम से छीन न ले। 12 जो जीत जाए
उसे मैं अपने परमेश्वर के भवन में एक
खम्भा बनाऊँगा, वहाँ से वह कभी बाहर
नहीं निकलेगा। मैं अपने परमेश्वर का नाम
और अपने परमेश्वर के शहर अर्थात् नए
यरूशलेम का नाम, जो परमेश्वर की तरफ़
से स्वर्ग से उतरने वाला है, और अपना नया
नाम भी इस पर लिखूँगा। 13 जो सुनना चाहे,
वह सुन ले कि आत्मा मण्डलियों से क्या
कहता है।"
14 लौदीकिया की मण्डली के संदेशवाहक
को यह लिखोः जो आमेन, विश्वासयोग्य,
सच्चे गवाह और परमेश्वर की सृष्टि की
शुरूआत का कारण हैं, वह यह कहते हैः
15 मैं तुम्हारे कामों को जानता हूँ कि तुम न
ठण्डे हो, न गर्म। अच्छा होता कि तुम ठंडे
या गर्म होते। 16 इसलिए कि तुम गुनगुने[b] हो,
मैं तुम्हें अपने मुँह से उगलने पर हूँ। 17 तुम
कहते हो कि मैं अमीर हूँ, मेरे पास सब कुछ
है और मुझे किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं
है। लेकिन तुम नहीं जानते कि तुम अभागे,
तुच्छ, कंगाल, अँधे और नंगे हो। 18 इसलिए
मैं तुम्हें सलाह देता हूँ कि मुझ से चोखा सोना
मोल लो, ताकि तुम अमीर हो जाओ और
सफ़ेद कपड़े ले लो, जिसे पहन कर तुम्हारे
नंगेपन की शर्म ढँक जाए और अपनी आँखों
में लगाने के लिए सुरमा ले लो, ताकि तुम
साफ़-साफ़ देख सको।
19 मैं जिन से प्यार करता हूँ, उन्हें सुधारता
और अनुशासित करता हूँ - इसलिए जोशीले

[a] **3.8** संदेश [b] **3.16** न ठण्डे, न गर्म

हो और मन बदलो। 20 देखो, मैं दरवाज़े पर
खड़ा खटखटाता हूँ। अगर कोई मेरी आवाज़
सुन कर दरवाज़ा खोले तो मैं उसके पास
अन्दर आकर उसके साथ खाना खाऊँगा
और वह मेरे साथ।
21 जो जीत हासिल करे उसे मैं अपने साथ
मेरा राजासन पर बैठाऊँगा, जिस तरह से मैं
भी जीत हासिल करके अपने पिता के साथ
राजासन पर बैठा हुआ हूँ। 22 जो कोई सुनना
चाहे, वह सुन ले कि आत्मा मण्डलियों से
क्या कहता है।

4 इन बातों के बाद मैंने नज़र डाली और
देखो, स्वर्ग में एक खुला दरवाज़ा था।
तुरही की सी आवाज़ जो मैंने पहले सुनी
थी, उसने मुझ से कहा, यहाँ ऊपर आओ,
और मैं तुम्हें वे बातें दिखाऊँगा जो आगे
होने वाली हैं। 2 मैं तुरन्त पवित्र आत्मा से
भर गया, और मैंने देखा कि स्वर्ग में एक
राजासन रखा था और उस पर ऐसा जन बैठा
हुआ था, 3 जो यशब और माणिक्य के समान
दिखता था, और राजासन के चारों तरफ़
पन्ना की तरह एक मेघ-धनुष दिखाई देता
था। 4 इस राजासन के चारों तरफ़ चौबीस
राजासन थे। उन राजासनों पर मैंने चौबीस
बुज़ुर्गों को सफ़ेद कपड़े पहने बैठे हुए देखा,
जो सिरों पर सोने के ताज पहने हुए थे। 5 उस
राजासन से बिजली की रोशनी, गर्जन और
बादलों की गड़गड़ाहट निकलती थी, और
राजासन के सामने आग के सात दीप जल
रहे थे, जो परमेश्वर की सात आत्माएँ हैं।
6 राजासन के सामने चमकते काँच सा
सफ़ेद समुद्र था, और राजासन के बीच और
चारों तरफ़ जीवित प्राणी थे, जिन के आगे
पीछे आँखें ही आँखें थीं। 7 पहला प्राणी
शेर की तरह, दूसरा प्राणी बछड़े की तरह,
तीसरे प्राणी का चेहरा मनुष्य की तरह और
चौथा प्राणी उकाब की तरह था। 8 इन चारों
जीवित प्राणियों में से हर एक के छः-छः पँख
थे। उनके चारों तरफ़ और बीच में आँखें
ही आँखें थीं। वे दिन-रात यह कहते नहीं
थकते थे, “पवित्र, पवित्र, पवित्र! परमेश्वर
सर्वशक्तिमान हैं, जो थे, जो हैं और जो आने
वाले हैं।
9 जब ये जीवित प्राणी उनको जो राजासन
पर बैठे हैं और हमेशा तक जीवित हैं,
महिमा, इज़्ज़त और धन्यवाद देते हैं, 10 तब
ये चौबीसों बुज़ुर्ग जो राजासन पर बैठे हैं,
उनके सामने गिरते हुए इबादत करते हैं और
अपने ताज रखते हुए कहते हैः 11 ‘हे हमारे
प्रभु और परमेश्वर, आप ही महिमा, इज़्ज़त
और अधिकार के लायक हैं, क्योंकि आप
ही ने सब चीज़ों को बनाया और आप ही की
इच्छा से उनकी रचना हुयी और वे अभी तक
बनी हुयी हैं।’

5 जो राजासन पर बैठे हुए थे, उनके
दाहिने हाथ में मैंने एक स्क्रौल देखा।
यह किताब अन्दर-बाहर दोनों ओर से लिखी
हुयी थी। इसे सात मुहरें लगा कर बन्द कर
दिया गया था। 2 फिर मैंने एक ताकतवर
स्वर्गदूत को देखा, जो बुलन्द आवाज़ में
यह कहता था, कि इस किताब को खोलने
और उसकी मुहरें[a] तोड़ने के लायक कौन
है? 3 न स्वर्ग में, न पृथ्वी पर, न पृथ्वी के
नीचे कोई उस किताब को खोलने या उस पर
निगाह डालने के लायक निकला। 4 इसलिए
कि कोई व्यक्ति उस पुस्तक को खोलने
या उस पर निगाह डालने के योग्य नहीं था,
मैं बिलख-बिलख कर रोने लगा। 5 तब उन

[a] 5.2 सील

बुज़ुर्गों में से एक मुझ से बोला, “मत रो। देखो, यहूदा के कबीले का वह सिंह, जो दाऊद का मूल है, उस किताब को खोलने और उसकी सातों मुहरें[a] खोलने के लिए जीत चुका है।”

6 मैंने उस राजासन और चारों प्राणियों और उन बुज़ुर्गों के बीच में मानो एक घात किया हुआ मेम्ना खड़ा देखा। उसके सात सींग और सात आँखें थीं - ये परमेश्वर की सात आत्माएँ हैं, जो सारी धरती पर भेजी जाती हैं। 7 उसने पास आकर जो राजासन पर बैठे हुए थे, उनके दाहिने हाथ से वह पुस्तक ले ली। 8 ऐसा होते ही वे चारों प्राणी और चौबीस बुज़ुर्ग उस मेम्ने के सामने गिर पड़े। हर एक के हाथ में वीणा और धूप से भरे हुए सोने के कटोरे थे। ये पवित्र लोगों की बिनतियाँ हैं।

9 वे यह नया गीत गाने लगे कि आप इस किताब को लेने और उसकी मुहरें खोलने के लायक हैं, क्योंकि आपने वध होकर अपने खून से हर एक कुल, भाषा, लोग और राष्ट्र में से परमेश्वर के लिए हमें खरीद लिया है। 10 और हमें हमारे परमेश्वर के लिये एक राज्य और पुरोहित[b] बनाया और हम पृथ्वी पर राज्य करेंगे।

11 जब मैंने देखा, तो उस राजासन और उन प्राणियों और उन बुज़ुर्गों के चारों तरफ़ बहुत से स्वर्गदूतों की आवाज सुनी, जिन की गिनती लाखों, करोड़ों में थी। 12 वे ऊँची आवाज़ से कहते थे, कि वध किया हुआ मेम्ना ही सारे अधिकार, धन, ज्ञान, शक्ति, आदर, महिमा और धन्यवाद के लायक है।

13 फिर मैंने स्वर्ग में और पृथ्वी पर और पृथ्वी के नीचे और समुद्र की सब बनायी हुयी चीज़ों को और सब कुछ को जो उन में है, यह कहते हुए सुना, कि जो राजासन पर बैठे हैं, उनका और मेम्ने का धन्यवाद, आदर और महिमा और शासन हमेशा-हमेशा तक रहे।

14 तब चारों प्राणियों ने कहा, ऐसा ही हो, और बुज़ुर्गों ने गिर कर दण्डवत् किया।

6 मैंने देखा जब मेम्ने ने उन सात मुहरों में से एक को खोला, तब उन चार प्राणियों में से एक को गरज के समान आवाज़ करते हुए सुना, “आओ”। 2 जब मैंने नज़र डाली तो एक सफ़ेद घोड़े को देखा और जो उस पर बैठा हुआ था, उसके पास एक धनुष था और उसे एक ताज दिया गया। वह युद्ध जीतने के लिए निकला कि जीत हासिल करे।

3 जब उसने दूसरी मुहर तोड़ी, तो मैंने दूसरे, जीवित प्राणी को यह कहते सुना, “आओ”। 4 तब लाल रंग का एक घोड़ा निकला। उसके सवार को पृथ्वी पर से शान्ति उठा लेने का अधिकार[c] दिया गया। साथ ही यह भी कि लोग एक दूसरे को मारें और उसे एक बड़ी तलवार दी गयी।

5 जब उसने तीसरी मुहर खोली, तो मैंने तीसरे जीवित प्राणी को यह कहते सुना, “आओ”। तब मैंने नज़र डाली, तो एक काले घोड़े को देखा। उस पर सवार व्यक्ति के हाथ में एक तराज़ू था। 6 मैंने उन चारों जीवित प्राणियों के बीच में से एक आवाज़ मानो यह कहते सुनी, “एक दीनार का एक चौथाई भाग गेहूँ, और एक दीनार का तीन चौथाई जव, लेकिन तेल और अंगूर का रस को नुकसान मत पहुँचाना”।

7 जब उसने चौथी मुहर तोड़ी, तो मैंने चौथे जीवित प्राणी को यह कहते सुना, ‘आओ’। 8 मैंने नज़र डाली और एक हल्के पीले रंग का घोड़ा देखा। उसके सवार का नाम “मौत”

[a] **5.5** सील [b] **5.10** याजक [c] **6.4** हक

था। और अधोलोक उसके पीछे-पीछे चला
जा रहा था। उन्हें प्राणियों के एक चौथे हिस्से
पर यह हक दिया था, कि तलवार, भुखमरी,
महामारी और धरती के वन पशुओं द्वारा
लोगों को मार डालें।
9 जब मेम्ने ने पाँचवीं मुहर तोड़ी, तो मैंने
वेदी के नीचे उन लोगों के प्राणों को देखा,
जो परमेश्वर के वचन और अपनी गवाही
बनाए रखने की वजह से वध किए गए थे।
10 वे ऊँची आवाज़ से पुकार कर कह रहे थे,
“हे पवित्र और सच्चे परमेश्वर आप कब तक
इन्साफ़ न करेंगे? और दुनिया में रहने वाले
लोगों से हमारे खून का पलटा कब तक नहीं
लेंगे?” 11 उन में से हर एक को सफ़ेद चोगा
दिया गया और उन से कहा गया, “कुछ देर
और आराम करो, जब तक कि तुम्हारे संगी
साथी और विश्वासियों की, जो तुम्हारी तरह
वध होने वाले हैं, गिनती पूरी न हो जाए।
12 जब मैंने मेम्ने को छठवीं मुहर तोड़ते हुए
देखा, तब एक बड़ा भूकम्प हुआ और ऊन
से बने कम्बल की तरह सूरज काला, और
चाँद खून की तरह हो गया। 13 आकाश के
तारे पृथ्वी पर इस तरह गिर पड़े जैसे बड़ी
आँधी के आने से अंजीर के पेड़ से कच्चे फल
गिर जाते हैं। 14 आकाश फट कर चटाई की
तरह लपेटा गया, और हर एक पहाड़ और
टापू अपनी जगह से हटाया गया।
15 पृथ्वी के बादशाह, प्रधान,
सेनाधिकारी, अमीर, शक्तिशाली, हर एक
दलित दास और हर एक आज़ाद इन्सान
पहाड़ों की गुफ़ाओं और चट्टानों में जा छुपे।
16 वे पहाड़ों और चट्टानों से कहने लगे,
“हमारे ऊपर गिर पड़ो और हमें उनकी
निगाह से जो राजासन पर बैठे हैं, तथा मेम्ने
के गुस्से से बचा लो। 17 क्योंकि उनके गुस्से
का डरावना समय आ गया है, और कौन है
जो उनका सामना कर सकता है?”

7 इसके बाद मैंने चार स्वर्गदूतों को पृथ्वी
के चारों कोनों में खड़े देखा। वे पृथ्वी
की चारों हवाओं को रोके हुए थे कि पृथ्वी,
समुद्र या किसी पेड़ पर हवा न चले। 2 फिर
मैंने एक और स्वर्गदूत को जीवित परमेश्वर
की मुहर लिए हुए पूर्व से ऊपर आते हुए
देखा। उसने उन चारों स्वर्गदूतों को जिन्हें
पृथ्वी और समुद्र को नुकसान पहुँचाने का
अधिकार दिया गया था, बुलन्द आवाज़ से
कहा, 3 “जब तक हम अपने परमेश्वर के
दासों के माथों पर मुहर न लगा दें, तब तक
पृथ्वी और समुद्र और पेड़ों को नुकसान न
पहुँचाना।” 4 मैंने मुहर लगे हुओं की गिनती
सुनी, जो 1,44,000 थी। इस्राएली सन्तानों
के हर एक गोत्र में से इन पर मुहर लगाई
गयी थी। 5 यहूदा के गोत्र में से बारह हज़ार
पर मुहर दी गई। रूबेन के गोत्र में से बारह
हज़ार पर, गाद के गोत्र में से बारह हज़ार पर,
6 आशेर के गोत्र में से बारह हज़ार पर, नप्ताली
के गोत्र में से बारह हज़ार पर, मनश्शिह के
गोत्र में से बारह हज़ार पर, 7 शमौन के गोत्र
में से बारह हज़ार पर, लेवी के गोत्र में से
बारह हज़ार पर, इस्साकार के गोत्र में से
बारह हज़ार पर, 8 ज़बूलून के गोत्र में से बारह
हज़ार पर, यूसुफ़ के गोत्र में से बारह हज़ार
पर, और बिन्यामीन के गोत्र में से बारह हज़ार
पर मुहर दी गई।
9 तब मैंने नज़र डाल कर एक अनगिनित
लोगों की बड़ी भीड़ देखी। ये लोग जो
हर एक देश, गोत्र, जाति और भाषा बोलने
वाले थे, राजासन और मेम्ने के सामने सफ़ेद
चोगे पहने, हाथ में खजूर की डालियाँ लिए

हुए खड़े थे। 10 ये लोग बुलन्द आवाज़ में
चिल्ला-चिल्ला कर कह रहे थे, “राजासन पर
विराजमान हमारे याहवे परमेश्वर और मेम्ने
से ही मुक्ति है!”
11 राजासन, बुज़ुर्ग और चार जीवित
प्राणियों को घेरे सारे स्वर्गदूत जो खड़े हुए थे,
वे सभी अपने मुँह के बल गिर कर परमेश्वर
की इबादत कर रहे थे। 12 “ऐसा ही हो!
हमारे परमेश्वर की स्तुति, महिमा, ज्ञान,
धन्यवाद, इज़्ज़त और अधिकार युगानुयुग
है। ऐसा ही हो!”
13 इसके बाद बुज़ुर्गों में से एक ने मुझ से
पूछा, “ये सफ़ेद कपड़े पहने हुए लोग कौन
हैं और कहाँ से आए हैं?”
14 मैंने जवाब में कहा, “महाशय, यह तो
आप ही जानते हैं।” उन्होंने मुझ से कहा, “ये
वे लोग हैं जो बड़ी तकलीफ़[a] से निकल कर
आए हैं। इन्होंने अपने कपड़ों को मेम्ने के
खून में धोकर सफ़ेद किया है। 15 इस वजह
से ये परमेश्वर के राजासन के सामने हैं और
उनके भवन में दिन-रात उनकी खिदमत[b]
करते हैं। जो राजासन पर बैठे हैं, वह अपने
लोगों के बीच रह कर उनकी देख-भाल
करेंगे, और अपने तम्बू से ढाँक कर अपनी
उपस्थिति से रक्षा करेंगे। 16 उन्हें भूख प्यास
नहीं लगेगी। सूरज उन्हें अपनी भयंकर गर्मी
से जला नहीं पाएगा। 17 क्योंकि मेम्ना जो
राजासन के बीच में है, उनको चराएगा[c], और
उन्हें जीवन रूपी जल के सोतों के पास ले
जाया करेगा, और परमेश्वर उनकी आँखों
से सब आँसू पोछ डालेंगे।”

8 जब मेम्ने ने सातवीं मुहर तोड़ी तब स्वर्ग
में आधे घन्टे तक सन्नाटा छा गया।
2 तब मैंने सात स्वर्गदूत देखे जो परमेश्वर
के सामने खड़े रहते हैं, और उन्हें सात
तुरहियाँ दी गयीं।
3 फिर एक और स्वर्गदूत सोने का धूपदान
लिए वेदी के पास खड़ा हो गया। उसे बहुत
धूप[d] दिया गया, कि वह उसे राजासन के
सामने रखी सोने की वेदी पर पवित्र लोगों की
बिनती के साथ चढ़ाए। 4 और धूप का धुआँ
पवित्र लोगों की बिनतियों के साथ स्वर्गदूत
के हाथ से ऊपर परमेश्वर के सामने पहुँचा।
5 तब स्वर्गदूत ने धूपदान में वेदी की आग
भर कर पृथ्वी पर फेंक दी। इसके बाद शोर,
बादल का गर्जन, बिजली का चमकना और
भूकम्प हुआ।
6 तब सातों स्वर्गदूत सात उन तुरहियों को,
जो उनके पास थीं, फूँकने के लिए तैयार हो
गए।
7 पहले स्वर्गदूत के फूँकते ही खून से मिले
ओले व आग पृथ्वी पर फेंक दिए गए। इस
से पृथ्वी का एक तिहाई हिस्सा जल गया,
तथा एक तिहाई पेड़ और सारी हरी घास भी
जल गयी।
8 दूसरे स्वर्गदूत के तुरही फूँकते ही मानो
आग से जलते हुए बड़े पहाड़ की तरह कोई

[a] **7.14** यातना [b] **7.15** सेवा [c] **7.17** रक्षा करेगा [d] **8.3** लोबान जैसा खुशबूदार पदार्थ

चीज़ समुद्र में डाल दी गयी, जिस से समुद्र
का एक तिहाई भाग खून बन गया। 9 समुद्र के
एक तिहाई जलचर मर गए और एक तिहाई
पानी के जहाज़ भी बर्बाद हो गए।
10 तीसरे स्वर्गदूत के तुरही फूँकते ही एक
बड़ा तारा मशाल की तरह जलता हुआ
आकाश से नदियों और झरनों के एक तिहाई
पर गिरा। 11 वह तारा नागदौना कहलाता है।
इस से पानी का एक तिहाई नागदौना सा
कड़वा हो गया। इस पानी के कड़वे हो जाने
की वजह से बहुत से लोगों की मौत हो गयी।
12 चौथे स्वर्गदूत के तुरही फूँकते ही सूरज
का एक तिहाई, चन्द्रमा का एक तिहाई तथा
तारों के भी एक तिहाई के तेज को नाश किया
गया, जिस से इन का एक तिहाई हिस्सा
अँधेरा हो गया, जिस से दिन के एक तिहाई
की रोशनी जाती रही।
13 जब मैंने फिर देखा तो आकाश के
बीच में एक स्वर्गदूत को उड़ते और बुलन्द
आवाज़ में यह कहते सुना, “उन तीनों
स्वर्गदूतों की तुरही की आवाज़ की वजह से
जिन का फूँका जाना अभी बाकी है, धरती
पर रहने वालों पर हाय, हाय, हाय!”

9 जब पाचवें स्वर्गदूत ने तुरही फूँकी तो
मैंने स्वर्ग से पृथ्वी पर एक तारा गिरता
हुआ देखा। उस स्वर्गदूत को अथाह कुण्ड
की चाभी दी गयी। 2 उसने अथाह कुण्ड
को खोला और उसमें से बड़ी भट्टी का सा
धुआँ उठा। सूरज और वायुमण्डल दोनों उस
धुएँ से अंधकारमय हो गए। 3 इस धुएँ में
से पृथ्वी पर टिड्डियाँ छा गयीं। इन टिड्डियों
को पृथ्वी के बिच्छुओं की तरह ताकत दी
गयी। 4 उन्हें यह आज्ञा भी दी गयी कि वे
पृथ्वी की घास, पेड़ या किसी हरी चीज़ को
नुकसान न पहुँचाएँ, लेकिन सिर्फ़ उन्हीं लोगों
को जिन के माथे पर परमेश्वर की मुहर
नहीं थी। 5 उन्हें जान से मारने का हक नहीं
दिया गया था। लेकिन पाँच महीने तक पीड़ा
पहुँचाने का आदेश था। यह पीड़ा बिच्छू के
डंक मारने जैसी थी। 6 उन दिनों में लोग मौत
खोजेंगे, लेकिन पाएँगे नहीं। वे मरना चाहेंगे
लेकिन मौत उन से दूर भागेगी।
7 ये टिड्डियाँ देखने में उन घोड़ों की तरह थीं
जो युद्ध के लिए तैयार होते हैं। उनके सिरों पर
मानो सोने के ताज थे। उनके चेहरे मनुष्यों के
चेहरों की तरह थे। 8 उनके बाल औरतों के
बाल की तरह और उनके दाँत सिंह के दाँत
की तरह थे। 9 उनके कवच लोहे के कवच
की तरह थे। उनके पँखों की आवाज़ लड़ाई
के लिए दौड़ने वाले बहुत से घोड़े वाले रथों
के शोर की तरह थी। 10 उनकी पूँछें बिच्छुओं
की तरह थीं। उन में ऐसे डंक थे, जिन में
लोगों को पाँच माह तक पीड़ा देने की ताकत
थी। 11 एक अथाह कुण्ड का दूत उनके ऊपर
राजा था। यहूदी भाषा में उसका नाम अबद्दोन
और यूनानी में अपुल्लयोन है।
12 पहली विपत्ति खत्म हुयी। देखो, इन सब
बातों के बाद दो और विपत्तियाँ आने वाली
हैं।
13 छठवें स्वर्गदूत के तुरही फूँकते ही, मैंने
परमेश्वर के सामने की सोने की वेदी के
चार सींगों में से एक आवाज़ सुनी। 14 वह
छठवें स्वर्गदूत से जिस के पास तुरही थी,
कह रहा था, “उन चार स्वर्गदूतों को जो
फ़रात महानदी के पास रोके गए हैं, आज़ाद
कर दो।” 15 वे चार स्वर्गदूत जो इस पल,
दिन, माह और साल के लिए रखे गए हैं,
आज़ाद कर दिए गए ताकि वे पृथ्वी की सारी
जनसंख्या की एक तिहाई को मार डालें।
16 मैंने सेना के घुड़सवारों की गिनती सुनी
जो बीस करोड़ थी।

17 मुझे दर्शन में घोड़े और उनके सवार इस
तरह दिखाई दिए: वे सवार कवच पहिने थे
जो धधकती आग,नीले और पीले रंग के
थे, और उन घोड़ों के सिर सिंहों के सिरों
के समान थे और उनके मुँह से आग, और
धुआँ और गंधक निकलता था। 18 इन तीन
महामारियों अर्थात् - उनके घोड़ों के मुँह से
निकलने वाली आग, धुआँ और गन्धक से
मानव जाति की एक तिहाई मार दी गयी।
19 उन घोड़ों की ताकत उनके मुँह और पूँछ
में थी, क्योंकि उनकी पूँछ साँपों की तरह थी,
जिन में सिर थे। इन्हीं से वे नुकसान पहुँचाते
थे।

20 फिर भी महामारियों से बचे लोग जो नहीं
मारे गए थे, अपने बुरे कामों में बने रहे -
यह कि उन्होंने बेजान - सोने, चाँदी, पीतल,
पत्थर और लकड़ी की मूर्तियों की पूजा बन्द
नहीं की और उन्होंने पश्चाताप नहीं किया। ये
मूर्तियाँ न तो देख सकती, न सुन सकती और
न चल सकती थीं। 21 महामारी से बचे हुए
लोगों में हत्या करने, जादू-टोने, व्यभिचार,
और चोरी करने से मन नहीं फिराया।

10 फिर मुझे एक और ताकतवर
स्वर्गदूत बादल ओढ़े हुए स्वर्ग
से उतरता दिखाई दिया। उसके सिर पर
मेघ-धनुष था। उसका चेहरा सूरज की तरह
और पाँव आग के खम्भे की तरह ये। 2 उसके
हाथ में एक खुली हुयी छोटी सी किताब
थी। उसने अपना दाहिना पाँव समुद्र पर और
बायाँ पृथ्वी पर रखा। 3 वह बुलन्द आवाज़
से ऐसा चिल्लाया जैसे शेर दहाड़ रहा हो।
उसके चिल्लाने से गर्जन के सात शब्द सुनायी
दिए। 4 गर्जन के सातों शब्द खत्म हो जाने पर
मैं लिखने वाला ही था लेकिन मुझे आकाश
में से एक शब्द यह कहते हुए सुनाई दिया,
"जो बातें गर्जन के सातों शब्दों ने कही हैं,
उन पर मुहर लगा दो और उन्हें मत लिखो।"
5 तब जिस स्वर्गदूत को मैंने समुद्र और
पृथ्वी पर खड़ा देखा था, उसने अपना
दाहिना हाथ स्वर्ग की तरफ़ उठाया।
6 परमेश्वर जो हमेशा-हमेशा जीवित हैं और
जिन्होंने स्वर्ग और उसकी सब चीज़ों,
पृथ्वी और उसकी सब चीज़ों तथा समुद्र
और उसकी सब चीज़ों को बनाया है
उनकी शपथ खा कर उसने कहा, "अब
और देर नहीं होगी।" 7 सातवाँ जब तुरही
फूँकने वाला होगा, तो उसकी आवाज़ से
परमेश्वर की छिपी बात पूरी हो जाएगी,
जिस की सूचना उन्होंने पहले से अपने सेवक
भविष्यद्वक्ताओं को दी थी।

8 और स्वर्ग से बोलने वाला व्यक्ति फिर
मेरे साथ बातें करने लगा। उसने मुझ से कहा
कि जा, जो स्वर्गदूत समुद्र और पृथ्वी पर
खड़ा है, उसके हाथ में की खुली हुई पुस्तक
ले ले।

9 तब मैंने उस स्वर्गदूत के पास जाकर
कहा, "यह छोटी किताब मुझे दे दो।" उसने
मुझ से कहा, "लो और इसे खा लो। यह
तुम्हारे पेट को कड़वा कर देगी, लेकिन मुँह
में शहद की तरह मीठी लगेगी।" 10 मैंने उस
किताब को स्वर्गदूत के हाथ से लेकर खा
लिया। वह मेरे मुँह में शहद जैसी मीठी लगी।
लेकिन उसके खाने के बाद मेरा पेट कड़वा
हो गया।

11 इसके बाद मुझ से कहा गया कि तुम्हें
बहुत से लोगों, राष्ट्रों, भाषाओं और राजाओं
के सामने फिर भविष्यवाणी करनी पड़ेगी।

11 इसके बाद किसी ने नरकट के
समान एक छड़ी देते हुए मुझ से
कहा, "उठो, परमेश्वर के भवन और वेदी

और उसमें आराधना करने वालों को नाप
लो। 2 लेकिन भवन का बाहरी आँगन छोड़
दो। उसे मत नापो, क्योंकि वह गैरयहूदियों
के लिए है। वे बयालीस महीने तक पवित्र
नगर को रौंदेंगे। 3 मैं अपने दो गवाहों को
अधिकार दूँगा और वे टाट ओढ़े हुए एक
हज़ार दो सौ साठ दिनों तक भविष्यवाणी
करेंगे। 4 ये जैतून के दो पेड़ और दो दीपदान
हैं जो पृथ्वी के स्वामी[a] के सामने खड़े
रहते हैं। 5 अगर उन्हें कोई नुकसान पहुँचाना
चाहता है, तो उनके मुँह से आग निकल कर
उनके दुश्मनों को भस्म करती है। अगर कोई
उनको नुकसान पहुँचाना चाहेगा, तो ज़रूर
इस तरह से मार डाला जाएगा। 6 उन्हें यह
हक है कि आकाश को बन्द कर दें कि
उनकी भविष्यवाणी के दिनों में बरसात न
हो। उन्हें सब पानी पर अधिकार है, कि
उसे खून बना डालें। यह भी कि जब चाहें
तब पृथ्वी पर हर तरह की विपत्तियाँ लाएँ।
7 जब वे अपनी गवाही दे चुकेंगे, तो वह
पशु जो अथाह कुण्ड में से निकलेगा, उन से
युद्ध करेगा और उन पर जीत हासिल करके
उन्हें मार डालेगा। 8 उनकी लाशें उस बड़े
शहर के चौराहे में पड़ी रहेंगी। यह शहर
आत्मिक रूप से सदोम और मिस्र कहलाता
है। वहीं उनके प्रभु यीशु क्रूस पर चढ़ाए गए
थे। 9 सभी राष्ट्रों, कुलों, भाषाओं और राज्यों
के लोग साढ़े तीन दिन तक उनकी लाशों को
देखते रहेंगे, लेकिन उन लाशों को कब्रों में
रखने न देंगे। 10 पृथ्वी के रहने वाले उनकी
मौत से खुश होंगे और जश्न मनाएँगे। वे
एक दूसरे को ईनाम भेजेंगे, क्योंकि इन दोनों
भविष्यद्वक्ताओं ने पृथ्वी के रहने वालों को
सताया था।"

11 साढ़े तीन दिन के बाद परमेश्वर की
तरफ़ से ज़िन्दगी की सांस उन में समा गयी।
वे अपने पैरों पर खड़े हो गए और उनके
देखने वालों पर भारी डर छा गया। 12 उन्हें
स्वर्ग से एक बुलन्द आवाज़ सुनाई दी, कि
यहाँ ऊपर आओ। यह सुन कर वे बादल पर
सवार होकर अपने दुश्मनों के देखते-देखते
स्वर्ग पर चढ़ गए।

13 फिर उसी क्षण एक बड़ा भूकम्प आया
जिस से शहर का दसवाँ भाग गिर पड़ा। उस
भूकम्प से सात हज़ार लोग मर गए। बाकी
बचे लोग डर गए और स्वर्ग के बनाने वाले
की बड़ाई की।

14 दूसरी विपत्ति खत्म हुयी, अभी, तीसरी
विपत्ति जल्दी आने वाली है।

15 जब सातवें दूत ने तुरही फूँकी, तो स्वर्ग
में बुलन्द आवाज़ उठ रही थी, लोग कह
रहे थे, "दुनिया का राज्य हमारे स्वामी और
उनके मसीह का राज्य बन गया है और वह
हमेशा-हमेशा तक राज्य करेंगे।"

16 तब चौबीस बुज़ुर्ग जो परमेश्वर के
सामने अपने-अपने राजासनों पर बैठे थे, मुँह
के बल गिर पड़े। उन्होंने यह कहते हुए
आराधना की, 17 "हे सर्वशक्तिमान स्वामी
परमेश्वर, जो हैं, जो थे, और जो आने वाले
हैं, हम आपका धन्यवाद करते हैं, कि आप
अपने बड़े अधिकार को लेकर शासन करने
लगे हैं। 18 गैरयहूदियों ने गुस्सा किया और
आपका प्रकोप उन पर आ पड़ा। वह समय
आ पहुँचा है, कि मरे हुओं का न्याय किया

[a] 11.4 प्रभु

जाए। साथ ही आपके सेवक भविष्यद्वक्ताओं
और पवित्र लोगों को और उन छोटों-बड़ों को
जो आपके नाम से डरते हैं, प्रतिफल दिया
जाए। यह भी कि पृथ्वी के बिगाड़ने वाले
बर्बाद कर दिए जाएँ। ”
19 परमेश्वर का भवन जो स्वर्ग में है, वह
खोला गया और उनके भवन में उनकी वाचा
का बक्सा दिखाई दिया। तभी बिजलियाँ,
शब्द, गर्जन और भूकम्प हुए और बड़े ओले
गिरे।

12 फिर स्वर्ग पर[a] एक बड़ा निशान
दिखायी दिया - एक महिला सूरज
को ओढ़े हुए थी, चाँद उसके पैरों के नीचे
और सिर पर बारह तारों का ताज था। 2 वह
गर्भवती थी, और बच्चे को जन्म देने से पहले
जच्चा की पीड़ा के कारण से चिल्ला रही थी।
3 एक और चिन्ह स्वर्ग में दिखाई दिया:
देखो, लाल रंग का एक बड़ा सा अजगर
था। उसके सात सिर, दस सींग थे और सभी
सिरों पर एक-एक ताज था। 4 उसने अपनी
पूँछ से आकाश के तारों का एक तिहाई भाग
खींच कर पृथ्वी पर फेंक दिया। वह अजगर
उस महिला के सामने खड़ा हो गया जो बच्चे
को जन्म देने वाली थी। वह बच्चे को उसके
जन्म होते ही खा लेना चाहता था। 5 महिला ने
एक बेटे को जन्म दिया जो लोहे के राजदण्ड
से सभी देशों पर शासन करने वाला था।
उस महिला का बच्चा अचानक ही परमेश्वर
और उनके राजासन के पास उठा कर पहुँचा
दिया गया। 6 लेकिन वह महिला भाग कर
उस जंगल में चली गयी, जहाँ परमेश्वर की
तरफ़ से उसके लिए जगह तैयार की गयी थी,
ताकि वहाँ एक हज़ार दो सौ साठ दिनों तक
पाली जाए।
7 फिर स्वर्ग में एक युद्ध हुआ। मीकाईल
और उसके स्वर्गदूत अजगर से लड़ने के लिए
निकले और अजगर तथा उसके दूतों के साथ
उनका घमासान युद्ध छिड़ गया। 8 अजगर
और उसके दूतों को मुँह की खानी पड़ी और
वहाँ उनके लिए कोई जगह न रही। 9 तब
वह बड़ा अजगर नीचे गिरा दिया गया - वही
पुराना साँप जो इबलीस और शैतान कहलाता
है और सारी दुनिया को बहकाता है। वह
पृथ्वी पर अपने दूतों समेत गिरा दिया गया।
10 तब मैंने स्वर्ग में बुलन्द आवाज़ में
किसी को यह कहते सुना, “अब हमारे
परमेश्वर की मुक्ति, शक्ति, शासन और
उनके मसीह का अधिकार दिखायी दिया है,
क्योंकि विश्वासियों पर दोष लगाने वाला,
जो हमारे परमेश्वर के सामने रात-दिन उनको
दोषी ठहराता था, नीचे गिरा दिया गया है।
11 लेकिन उन्होंने मेम्ने के खून और अपनी
गवाही के वचन की वजह से उस पर जीत
पायी है, क्योंकि मरते दम तक उन्होंने अपनी
जान की परवाह नहीं की। 12 इसलिए हे स्वर्ग
और उस में रहने वालो, खुश हो। पृथ्वी और
समुद्र पर हाय! क्योंकि शैतान बहुत गुस्से
से तुम्हारे पास उतर आया है, क्योंकि वह
जानता है कि उस का समय थोड़ा ही है।”
13 जब अजगर ने देखा कि मैं पृथ्वी पर
फेंक दिया गया हूँ, तो वह उस महिला को
जिस ने बेटे को जन्म दिया था, सताने लगा।
14 लेकिन उस महिला को बड़े उकाब के दो
पँख दिए गए, कि वह अजगर के सामने से
जंगल में अपनी जगह पहुँच जाए, जहाँ वह
1260 दिनों तक पाली जाए। 15 फिर अजगर
ने महिला के सामने अपने मुँह से नदियों का
सा पानी बहाया ताकि वह महिला को पानी
के बहाव में बहा ले जाए, 16 लेकिन धरती

[a] **12.1** या आकाश

ने उस महिला की मदद की। पृथ्वी ने अपना मुँह खोल कर उस नदी को निगल लिया, जो अजगर के मुँह से निकली थी। 17,18 अजगर को महिला पर गुस्सा आया और उसकी बची हुयी सन्तान से जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते और यीशु की गवाही देने पर स्थिर हैं, लड़ने को गया। और समुद्र के किनारे की रेत पर अजगर खड़ा रहा।

13 मैंने एक ऐसे पशु को समुद्र में से निकलते देखा, जिस के दस सींग और सात सिर थे। उसके सींगों पर दस राजमुकुट थे। उसके सिरों पर बेइज़्ज़ती के नाम लिखे हुए थे। 2 जिस पशु को मैंने देखा, वह चीते की तरह था, लेकिन इसके पैर भालू की तरह और मुँह शेर की तरह था। अजगर ने इस पशु को अपनी ताकत, सिहांसन और ज़बरदस्त अधिकार दिया। 3 उस पशु के तमाम सिरों में से एक बुरी तरह से ज़ख्मी होने की वजह से वह मरने की हालत में लग रहा था, लेकिन वह जानलेवा ज़ख्म ठीक हो गया। और सारी दुनिया के लोग आश्चर्य के साथ इस पशु को मानने लग गए। इसलिए कि अजगर ने उन्हें शासन करने का अधिकार दिया था, 4 वे लोग उस अजगर की इबादत[a] यह कहते हुए करने लगे, "इस पशु की तरह कौन है? और उसके खिलाफ़ कौन लड़ सकता है?"

5 उस पशु को डींग मारने और बेइज़्ज़ती करने का मुँह दिया गया। उसे बयालीस महीनों तक शासन चलाने की इज़ाज़त दी गयी। 6 इसलिए पशु ने मुँह खोलकर परमेश्वर की बेइज़्ज़ती की - ताकि परमेश्वर के नाम, स्वर्ग और वहाँ रहने वालों की बदनामी करे। 7 इस पशु को इज़ाज़त दी गयी कि वह परमेश्वर के पवित्र लोगों के खिलाफ़ लड़ाई छेड़े और उन्हें जीत ले। उसे सभी जनजाति, लोग, अलग-अलग भाषा बोलने वाले लोगों और देशों के ऊपर शासन करने का हक दिया गया। 8 और दुनिया में रहने वाले सभी लोग इस पशु की इबादत करेंगे, अर्थात् वे लोग जिन का नाम उस जीवन की किताब में, जो कुर्बान किए गए मेम्ने की है, नहीं लिखे गए हैं। यह मेम्ना दुनिया की शुरूआत के समय से ही मारा गया था। 9 जो सुनना चाहे वह सुन ले, 10 कि जो कैदी होने के लिए बुलाया गया है, वह कैदखाने में डाला जाएगा। जो तलवार से मारता है वह तलवार से मारा जाएगा। पवित्र लोगों का धीरज और विश्वास इसी में है।

11 फिर मैंने पृथ्वी में से एक और पशु को निकलते देखा। एक मेम्ने की तरह इसके दो सींग थे, लेकिन यह एक अजगर की तरह बोलता था। 12 उस पहिले पशु की मौजूदगी में यह दूसरा पशु सब अधिकार काम में लाता है। यह दूसरा पशु, उस पहले पशु की, जिस का खतरनाक ज़ख्म अच्छा हो चुका था, उपासना सारी दुनिया के लोगों से करवाता है। 13 वह बड़े-बड़े अजीब काम दिखाता है, यहाँ तक कि आकाश से पृथ्वी पर आग बरसा देता है। 14 इन, अजीब कामों से जिन्हें उस पशु के सामने दिखाने का अधिकार उसे हासिल था, वह पृथ्वी पर रहने वालों को धोखा देता था। वह उन से यह कहता था कि उस पशु की मूरत को बनाओ, जिस की देह पर तलवार का घाव था और जो फिर से ज़िन्दा हो गया था। 15 उसे पशु की मूरत में जान डालने का अधिकार दिया गया, जिस से वह मूरत बोल सके। यह भी कि जितने लोग उस मूरत को पूजने से इन्कार

[a] **13.4** पूजा

करें, उन्हें मरवा डाले। 16 उसने छोटे-बड़े,
अमीर-गरीब, आज़ाद-गुलाम, सभी के दाहिने
हाथ या माथे पर एक छाप लगा दी। 17 उसने
ऐसा भी किया, कि जिस के पास उस पशु
का नाम था उसके नाम की संख्या की छाप
न हो, उसको छोड़ और कोई इन्सान लेन देन
न कर पाए।
18 जिसे समझ हो वह उस पशु की संख्या
का हिसाब लगा ले, क्योंकि यह संख्या
इन्सान की है। यह है छः सौ छियासठ।

14 मैंने जब वहाँ एक नज़र डाली तो
मेम्ने को सिय्योन पहाड़ पर खड़ा
देखा। उनके साथ 1,44,000 लोग थे। उनके
माथे पर मेम्ने का और उसके पिता का नाम
लिखा था। 2 फिर मैंने स्वर्ग से ऐसी आवाज़
सुनी, जो पानी की बहुत धाराओं और गर्जन
की सी थी, यह वीणा की आवाज़ की तरह
थी। 3 वे राजासन के सामने और चारों ज़िन्दा
प्राणियों और प्राचीनों[a] के सामने एक नया
गीत गा रहे थे। पृथ्वी से मोल लेकर छुड़ाए
गए 1,44,000 लोगों को छोड़ कर कोई उस
गीत को सीख नहीं सकता था। 4 ये वे लोग
हैं जिन्होंने कभी किसी से यौन सम्बन्ध नहीं
रखा और कुँवारे हैं। ये वे लोग हैं जो मेम्ने
के पीछे, जहाँ-जहाँ वह जाता है, जाते हैं।
परमेश्वर और मेम्ने के लिए एक खास भेंट
के रूप में उन्हें पृथ्वी पर रहने वालों में से
खरीदा गया है। 5 उन्होंने कभी भी झूठ नहीं
बोला और निर्दोष हैं।
6 फिर मैंने एक और स्वर्गदूत को आकाश
में उड़ते देखा। उसके पास सुनाने के लिए
अनन्त खुशी की खबर थी। 7 यह खबर हर
देश, हर कुल, तथा हर भाषा के लोगों के
लिए थी। उसने चिल्ला कर कहा, “परमेश्वर
को इज़्ज़त दो, उनकी इबादत[b] करो, क्योंकि
उनके इन्साफ़ करने का समय आ गया है।
उन्हीं की आराधना करो, जिन्होंने आकाश,
पृथ्वी, समुद्र और जल के सोते बनाए।”
8 तब एक और स्वर्गदूत यह कहता हुआ
आया, “गिर पड़ा, विशाल बाबुल गिर पड़ा,
जिस ने अपने बुरे काम की वासनामय शराब
सब देशों को पिलातुस थी।”
9 इन के बाद एक तीसरा स्वर्गदूत ऊँची
आवाज़ से यह कहता आया, “अगर कोई
इस पशु और उसकी मूरत की पूजा करे और
अपने माथे या हाथ पर उसकी छाप लगाए,
10 उसे भी परमेश्वर के क्रोध रूपी शराब, जो
उनके गुस्से के कटोरे में भरपूर उण्डेली गयी
है, पीना पड़ेगा। उसे पवित्र स्वर्गदूतों और
मेम्ने की मौजूदगी में आग और गन्धक की
भयंकर पीड़ा सहनी पड़ेगी। 11 उनकी पीड़ा
का धुआँ हमेशा-हमेशा तक उठता रहेगा। जो
लोग उस पशु और उसकी मूरत की उपासना
करेंगे और उसके नाम की छाप लेंगे, उन्हें
दिन और रात चैन नहीं मिलेगा। 12 यहाँ पर
परमेश्वर के लोगों की बात आती है, यहाँ वे
लोग हैं जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते
हैं, और विश्वास में बने हैं। ”
13 फिर मैंने स्वर्ग से सुना, “लिखो, वे
धन्य हैं, जो विश्वास करने के बाद मरेंगे।
पवित्र आत्मा कहता है, हाँ, क्योंकि वे अपनी
मेहनत से आज़ाद हो जाएँगे और उनके कामों
का हिसाब रखा जाएगा।”
14 मैंने निगाह डाली और देखो, एक उजला
बादल है। उस बादल पर मनुष्य के पुत्र के
समान कोई बैठा है। इसके सिर पर सोने
का मुकुट और हाथ में चोखा हँसुआ है।
15 फिर एक और स्वर्गदूत ने प्रार्थना भवन
में से निकलकर, बादल पर बैठे हुए व्यक्ति

[a] **14.3** बुज़ुर्गों [b] **14.7** उपासना

से ऊँची आवाज़ में कहा, “हँसुआ लगा कर
फ़सल काटो। क्योंकि पृथ्वी की फ़सल पूरी
तरह से तैयार है, क्योंकि फ़सल के इकट्ठा
करने का समय आ पहुँचा है”। 16 इसलिए जो
बादलों पर बैठा हुआ था उसने अपने हँसुए
से पृथ्वी की फ़सल को काटा।
17 तब एक और स्वर्गदूत स्वर्ग के प्रार्थना
भवन में से बाहर निकला, जिस के हाथ में
भी एक तेज हँसुआ था। 18 एक और स्वर्गदूत
वेदी से बाहर आया, जिसे आग पर अधिकार
था। जिस स्वर्गदूत के पास तेज़ हँसुआ था
उसने,उससे ऊँची आवाज़ में कहा, “इसलिए
कि अंगूर पूरी तरह से पक चुके हैं, उनके
गुच्छों को हँसुए से काट लो।” 19 इसलिए
स्वर्गदूत ने अपने हँसुए को पृथ्वी पर घुमा
कर, पृथ्वी के अंगूर के बगीचे में से अंगूर
काट लिए और उसे परमेश्वर के गुस्से के
रसकुण्ड में फेंक दिया। 20 शहर के बाहर रस
कुण्ड में अंगूर को रौंदा गया और रस कुण्ड
से लगभग सौ कोस तक खून का झरना बह
कर घोड़े की लगाम तक पहुँच गया।

15 फिर मैंने स्वर्ग में एक बड़ा और
अजीब निशान देखा। वह यह कि
सात स्वर्गदूतों के पास सातों आने वाली
मुसीबतें थीं। उनके हो जाने पर परमेश्वर
के ज़बरदस्त गुस्से का अन्त है। 2 मैंने आग
से मिले हुए काँच का सा एक समुद्र देखा।
जिन लोगों ने उस जानवर, उसकी मूरत और
उसके नाम के अंक पर जीत हासिल की थी,
उन्हें उस काँच के समुद्र के पास परमेश्वर
की वीणाओं को लिए हुए खड़े देखा। 3 वे
परमेश्वर के दास मूसा का गीत और मेम्ने
का गीत गा कर कहते थे, “हे सब से ज़्यादा
ताकतवर प्रभु परमेश्वर, आपके काम बड़े
और अजीब हैं। हे पवित्र सन्तों के राजा,
आपके काम न्यायपूर्ण और सच्चे हैं। 4 हे प्रभु,
आप से कौन न डरेगा और आपके नाम की
इज़्ज़त न करेगा? क्योंकि आप ही पवित्र हैं।
सभी देश आकर आपकी आराधना करेंगे,
क्योंकि आपके इन्साफ़ के काम दिखाए जा
चुके हैं।”
5 इसके बाद मैंने यह देखा कि स्वर्ग में
प्रार्थना भवन[a] जो कि गवाही का तम्बू है,
खोला गया। 6 उस प्रार्थना भवन[b] में से सात
स्वर्गदूत सात विपत्तियों को लेकर निकले। वे
मलमल के साफ़ कपड़े पहने और छाती पर
सुनहरा पटुका लिए हुए थे। 7 तब उन चार
जीवित प्राणियों में से एक ने हमेशा-हमेशा
तक जीवित रहने वाले परमेश्वर के गुस्से से
भरे हुए सात कटोरों को सात स्वर्गदूतों को
दे दिया। 8 प्रार्थना भवन[c] परमेश्वर की शान
और उनकी शक्ति के तेज से भर गया। और
जब तक सात स्वर्गदूतों की सात मुसीबतें
खत्म नहीं हुयीं, तब तक प्रार्थना भवन[d] में
कोई भी जा न सका।

16 तब मैंने प्रार्थना भवन में से किसी
को स्वर्गदूतों से ऊँची आवाज़ में यह
कहते सुना, “जाओ और परमेश्वर के गुस्से
के सात प्यालों को पृथ्वी पर उण्डेल दो”।
2 पहले स्वर्गदूत ने जाकर अपना कटोरा
पृथ्वी पर उण्डेल दिया। इस वजह से उन
लोगों पर जिन्होंने पशु की छाप ली थी और
जो उसकी मूर्ति की पूजा करते थे, बहुत
तकलीफ़ देने वाले फोड़े निकल आए।
3 दूसरे स्वर्गदूत ने जब अपना कटोरा समुद्र
पर उण्डेला तो सारा पानी मरे हुए इन्सान के
खून की तरह हो गया और उसमें का हर एक
प्राणी मर गया।

[a] 15.5 मन्दिर [b] 15.6 मन्दिर [c] 15.8 मन्दिर [d] 15.8 मन्दिर

4 तीसरे ने अपना कटोरा नदियों और पानी
के सोतों पर उण्डेल दिया और वे सब खून
बन गए। 5 फिर मैंने पानी के स्वर्गदूत को
यह कहते सुना, “हे पवित्र जो हैं और जो
थे, आप इन्साफ़ करने वाले हैं और आपने
यह इन्साफ़ किया है, 6 क्योंकि इन लोगों ने
पवित्र लोगों और नबियों का खून बहाया था,
इसलिये आपने उन्हें पीने के लिए खून दिया
है। वे इसी के लायक भी हैं।”
7 फिर मैंने वेदी से यह आवाज़ सुनी, “हाँ,
हे सर्वशक्तिशाली प्रभु परमेश्वर, आपके
फ़ैसले ठीक और सच्चे हैं।”
8 और चौथे ने अपना कटोरा सूरज पर
उण्डेल दिया, और उसे मनुष्यों को आग
से झुलसा देने का हक दिया गया। 9 बहुत
भयंकर गर्मी से लोग झुलस गए और उन्होंने
परमेश्वर की, जिन्हें इन विपत्तियों पर
अधिकार है, निन्दा की। उन्होंने अपने बुरे
कामों को न छोड़ा और न ही परमेश्वर की
बड़ाई की।
10 तब पाँचवें स्वर्गदूत ने अपने कटोरे को
पशु के राजासन पर उण्डेल दिया और उसका
राज्य अँधेरे में डूब गया। उसके मानने वाले
अपने दाँतों को पीसने लगे। 11 अपनी पीड़ा
और ज़ख्मों की वजह से वे परमेश्वर को बुरा
कहने लगे। लेकिन उन्होंने अपने गंदे कामों
को न छोड़ा और न परमेश्वर की ओर मुड़े।
12 तब छठे स्वर्गदूत ने बड़ी नदी फ़रात[a]
पर अपना कटोरा उण्डेल दिया। वह सूख
गई ताकि पूर्व दिशा के राजा अपनी फ़ौजों
को बिना किसी रुकावट पश्चिम दिशा की
तरफ़ ले जा सकें। 13 फिर मैंने मेंढक की
तरह दिखने वाली तीन दुष्ट आत्माओं को
अजगर, उस पशु और झूठे भविष्यद्वक्ता
के मुँह से निकलते देखा। 14 वे दुष्टात्माएँ
हैं जो अजीब काम करने के साथ दुनिया
के शासकों के पास जाती हैं। वे सब से
शक्तिशाली परमेश्वर के बड़े इन्साफ़[b] के
दिन प्रभु के खिलाफ़ युद्ध करने के लिए उन्हें
अरमेगादोन नाम के स्थान में इकट्ठा करती
हैं।
15 “देखो, मैं चोर की तरह अचानक आ
जाऊँगा। वे लोग आशीषित हैं जो मेरा
इन्तज़ार करते हैं। जो अपने कपड़ों को तैयार
रखते हैं, ताकि उन्हें नंगेपन और शर्मिन्दगी
का सामना न करना पड़े।”
16 फिर दुष्टात्माओं ने शासकों और उनकी
फ़ौजों को, इब्रानी में आरमेगादोन कहलाने
वाली जगह पर इकट्ठा किया।
17 तब सातवें स्वर्गदूत ने अपने कटोरे को
हवा में खाली कर दिया। और स्वर्ग के
पवित्र स्थान में परमेश्वर के राजासन से
एक ज़ोरदार आवाज़ यह कहते हुए सुनी
गयी, “सब कुछ पूरा हो चुका है।” 18 फिर
बिजलियाँ, शब्द, गर्जन और एक भूकम्प
हुआ। यह ऐसा ज़बरदस्त भूकम्प था, जैसा
पृथ्वी पर इन्सान के रखे जाने के समय से
कभी भी नहीं हुआ था। 19 बड़ा शहर तीन
हिस्सों में बँट गया और देशों के शहर नाश हो
गए। परमेश्वर के सामने ‘बेबिलोन महान’
को याद किया गया ताकि परमेश्वर के गुस्से
की शराब उसे[c] पिलायी जाए। 20 हर एक टापू
अपनी-अपनी जगह से सरक गया, पहाड़ों
का तो पता ही नहीं चला। 21 आकाश से
लोगों पर मन-मन भर के ओले गिरे। यह
विपत्ति बहुत दुखदायी होने की वजह से
लोगों ने परमेश्वर को बुरा कहा।

17 जिन सात स्वर्गदूतों के पास सात
कटोरे थे, उन में से एक ने आकर

[a] **16.12** यूफ्रेटीज़ [b] **16.14** न्याय [c] **16.19** बाबेल को

मुझ से कहा, “आओ, जो बड़ी वेश्या बहुत
से पानी के ऊपर बैठी हुयी है, मैं उसके
दण्ड को तुम्हें दिखाऊँगा। 2 इसी के साथ
दुनिया के राजाओं ने व्यभिचार किया था
और दुनिया के लोग उस औरत के साथ
व्यभिचार की शराब से मतवाले हो गए थे।”
3 इसके बाद स्वर्गदूत मुझे पवित्र आत्मा में
एक जंगल ले गया। वहाँ मैंने सात सिर और
दस सींगों वाले एक लाल जानवर को देखा।
निन्दा भरे नामों से ढँके इस पशु पर एक
औरत बैठी हुयी थी। 4 यह औरत बैजनी और
लाल कपड़े पहने हुयी थी। वह सोने, मोती
और हीरे के गहनों से सजी हुयी थी। उसके
हाथ में एक सोने का प्याला था, जो घिनौनी
चीज़ों और व्यभिचार की गंदगी से भरा हुआ
था। 5 उसके माथे पर उसका भेद भरा नाम
लिखा था; “भेद, बड़ा बेबिलोन, वेश्याओं
और पृथ्वी के घिनौनेपन की माता।”
6 मैंने उस औरत को पवित्र लोगों और यीशु
के गवाहों का खून पीकर मतवाला देखा।
उसे देख कर मैं आश्चर्य से भर गया।
7 उस स्वर्गदूत ने मुझ से कहा, “तुम्हें
आश्चर्य क्यों हो रहा है? मैं सात सिरों और उस
सींगों वाले जानवर और उस पर बैठी औरत
के भेद को तुम पर प्रगट करूँगा। 8 जो पशु
तुमने देखा है, वह पहिले था, पर अभी नहीं
है। वह अथाह कुण्ड से निकल कर विनाश
में पड़ जाएगा। दुनिया की शुरूआत से तमाम
लोग जिन के नाम जीवन की किताब में नहीं
लिखे गए, इस जानवर को जो पहले था और
अब नहीं है, लेकिन आने वाला है, देख कर
अचम्भा करेंगे।
9 यहाँ पर बुद्धि की बात है कि जो सातों सिर
हैं वे सातों पहाड़ हैं जिन पर वह औरत बैठी
है। 10 वे सात राजा भी हैं। जिन में से पाँच का
राज्य खत्म हो गया है, एक राज्य कर रहा
है और एक अभी तक नहीं आया है। जब
वह आएगा, थोड़े समय के लिए ज़रूर बना
रहेगा। 11 वह जानवर जो पहले था और अब
नहीं है, वह खुद आठवाँ राजा है। हालाँकि
वह सातों में से एक है जो नाश होने वाला है।
12 दस सींग जो तुमने देखे थे, वे दस राजा
हैं जिन्हें अब तक राज्य नहीं मिला है। लेकिन
इन राजाओं को एक घंटे के लिए पशु के साथ
राज्य करने का अधिकार मिलेगा। 13 इन
राजाओं का एक ही मकसद है। वे अपनी
ताकत और अधिकार पशु को देंगे। 14 वे
सभी मेम्ने[a] से लड़ेंगे, लेकिन मेम्ना उनको
जीत लेगा। वही प्रभुओं का प्रभु और राजाओं
का राजा है। जो मेम्ने के साथ हैं, उन्हें चुना
हुआ और विश्वासयोग्य कहा जाता है।
15 तब स्वर्गदूत ने मुझ से कहा, कि जिस
पानी पर तुमने व्यभिचारिन को बैठे देखा
है, वह भीड़ अलग-अलग देश और अलग
ज़ुबान के लोग हैं। 16 जिन दस सींगों और
जानवर को तुमने देखा था - वे और पशु
व्यभिचारिन से नफ़रत करके उसे नंगा और
बर्बाद कर देंगे। वे उसे खाएँगे और जला
डालेंगे। 17 परमेश्वर ने अपने मकसद को
पूरा करने के लिए उनको एक मन दिया,
ताकि जब तक परमेश्वर की कही बात पूरी
न हो जाए तब तक पशु को अपनी हुकूमत
का हक सौंप दें।
18 यह स्त्री जिसे तुमने देखा था, वह बड़ा
नगर है जो इस दुनिया के राजाओं पर राज्य
करता है।”

18 इसके बाद मैंने एक और स्वर्गदूत
को स्वर्ग से उतरते हुए देखा जिसे
बड़ा अधिकार था। उसके तेज से पृथ्वी

[a] **17.14** यीशु

चमक उठी। 2 उसने ऊँची बुलन्द आवाज़ से
पुकार कर कहा, “महानगर बाबुल ढह गया,
ढह गया! वह प्रेतात्माओं का निवास और
सब तरह की गंदी आत्माओं का अड्डा, एक
अशुद्ध और घिनौने पक्षी का अड्डा हो गया
था। 3 क्योंकि उसके व्यभिचार की वासना
की शराब सभी देशों ने पी है। इस दुनिया
के राजाओं ने उसके साथ व्यभिचार किया
है। उसकी विलासिता की वजह से व्यापारी
अमीर हो गए हैं।”
4 मैंने स्वर्ग से आने वाली एक और आवाज़
को यह कहते हुए सुना, मेरे लोगो, उसमें से
निकल आओ, ताकि तुम उसके अपराधों
में हिस्सेदार न बनो और उस पर आने
वाली विपत्तियों से बच सको। 5 क्योंकि
उसके अपराध स्वर्ग तक पहुँच गए हैं और
परमेश्वर ने उसके गलत कामों को याद
किया है। 6 जैसा उसने तुम्हारे साथ किया
है, वैसा ही उसके साथ करो और उसके
कामों के मुताबिक उसे दोगुना बदला दो।
जिस प्याले से उसने उण्डेला है, उसके बदले
में उसके प्याले में दो गुना दे दो। 7 जिस
तरह से उसने अपने आप को इज़्ज़त दी
है और विलासिता में जीवन बिताया है,
उसी अनुपात में उसको पीड़ा और दुख दो।
क्योंकि वह अपने मन में कहती है, “मैं रानी
की तरह बैठी हूँ और विधवा नहीं हूँ, मुझे
कभी भी कुछ दुख नहीं होगा। 8 इसलिए एक
ही दिन में उस पर विपत्तियाँ आ पड़ेंगीः मौत,
विलाप और आकाल। वह आग से भस्म
हो जाएगी, क्योंकि इन्साफ़ करने वाले प्रभु
परमेश्वर ताकतवर हैं।
9 इस दुनिया के जिन राजाओं ने उससे
व्यभिचार किया है और उसके साथ शान
शौकत में रहे हैं, वे उसके जलने का धुआँ
देख कर उसके लिए रोएँगे और विलाप
करेंगे, 10 उसकी पीड़ा की वजह से वे डर
कर दूर खड़े रह कर कहेंगे, ‘हाय, हाय, बड़े
शहर बाबुल! ताकतवर शहर। एक घन्टे ही
में तुम्हें सज़ा मिल गयी।’
11 इस दुनिया के राजा उसके लिए रोएँगे
और दुख मनाएँगे, क्योंकि उन से कोई भी
कुछ खरीदेगा नहीं। 12 सोना चाँदी, कीमती
पत्थर और मोती, बढ़िया मलमल, बैजनी
कपड़े, रेशम और लाल कपड़े, हर तरह की
लकड़ी और हाथी दाँत की बनायी चीज़ें,
महँगी लकड़ी, पीतल, लोहे और मार्बल क़ी
चीजें। 13 दालचीनी, इत्र, सुगंधित पदार्थ,
लोबान, शराब, तेल, ऊँची किस्म का आटा,
जानवर, भेड़, घोड़े, रथ, लोगों की आत्मा
और देह।
14 जिन अच्छी चीज़ों की तुम्हारी आत्मा
कामना करती रही, वह तुम्हें मिल नहीं पायीं।
तुम्हारी विलासिता और शान तुम से जाती
रही और तुम उसे कभी नहीं देखोगे।
15 ‘जो व्यापारी उसकी वजह से अमीर
बन गए थे, वे उसकी पीड़ा के डर से
बहुत दूर खड़े बिलख-बिलख कर रोएँगे।
16 वे कहेंगे “हाय! हाय! वह बड़ा शहर जो
बढ़िया मलमल, बैजनी और लाल कपड़े
और सोने, कीमती पत्थर और मोतियों से
सजा हुआ था, 17 एक घन्टे ही में उसकी
दौलत सम्पत्ति गायब सी हो गयी।” जहाज़
का हर एक कप्तान और वे जो जहाज़ से
यात्रा करते हैं, मल्लाह और जो समुद्री व्यापार
करते हैं, दूर खड़े रहे। 18 जब लोगों ने उसके
जलने का धुआँ देखा, तो चिल्ला कर कहा,
“क्या इस बड़े शहर की तरह कोई शहर
था! 19 उन्होंने अपने सिर पर धूल डालते
हुए ऊँची आवाज़ में रोते-बिलखते हुए कहा,
“हाय! हाय! वह बड़ा शहर जहाँ पर पानी
जहाज़ के मालिक, उस औरत की दौलत से

अमीर बन गए थे। क्योंकि एक ही घन्टे में
वह बर्बाद हो गयी।' 20 हे स्वर्ग, पवित्र प्रेरितों
और भविष्यद्वक्ताओं, इस बात से खुश हो,
क्योंकि परमेश्वर ने उसको सज़ा दी है।"
21 एक ताकतवर स्वर्गदूत ने एक चक्की के
पत्थर के समान एक बड़े पत्थर के चक्के को
समुद्र में डाल दिया और कहा, "इस तरह से
बड़ा शहर बाबुल बहुत ज़ोर से ऐसा फेंक
दिया जाएगा कि उसका नामो-निशान नहीं
मिलेगा। 22 वीणा बजाने वालों, संगीतज्ञों,
बाँसुरी बजाने वालों, तुरही फूँकने वालों की
आवाज़ फिर कभी तम्हारे बीच सुनायी नहीं
देंगी। चक्की चलने की आवाज़ उसमें सुनाई
नहीं देगी, किसी भी काम को करने वाला
कोई व्यक्ति तुम में फिर कभी पाया नहीं
जाएगा। 23 किसी दिए की रोशनी फिर कभी
दिखायी नहीं देगी। दुल्हे और दुल्हन की
आवाज़ तुम्हारे यहाँ नहीं सुनायी देगी। दुनिया
के बड़े लोग और सभी देशों के व्यापारी
तुम्हारे जादू-टोने से भरमाए गए थे। 24 इस
पृथ्वी पर जो लोग मार डाले गए थे उनका,
पवित्र लोगों का और भविष्यद्वक्ताओं का
खून तुम में पाया गया था।"

19 इन सब बातों के बाद, स्वर्ग में बहुत
से लोगों की एक बुलन्द आवाज़
मैंने सुनी, "हालेलूयाह! मुक्ति, महिमा[a] और
ताकत हमारे प्रभु परमेश्वर के पास हैं।
2 इसलिये कि उनका इन्साफ़ सच्चा और ठीक
है, बड़ी वेश्या को सज़ा मिली है, जिस ने
सारी दुनिया को अपने व्यभिचार से गुमराह
किया था। उसके द्वारा बहाये गए खून की
सज़ा भी उसे मिल गयी।
3 उन्होंने फिर से कहा, "हालेलूयाह! और
हमेशा-हमेशा के लिए उसके जलने का धुआँ
उठता रहेगा।"
4 और चौबीसों बुज़ुर्गों और चार जीवित
प्राणियों ने परमेश्वर को जो राजासन पर बैठे
हुए थे, साष्टांग प्रणाम किया और आराधना
करते हुए कहा, "आमीन, हालेलूयाह!"
5 तब राजासन से आती हुयी यह आवाज़
सुनायी दी, "तुम सभी जो सेवक हो, चाहे
छोटे हो या बड़े और उन से डरते हो,
परमेश्वर की बड़ाई करो।"
6 फिर मुझे भीड़ का सा शोर सुनायी
दिया। यह बहुत ढेर पानी और ज़बरदस्त
गड़गड़ाहट की आवाज़ थी, "हालेलूयाह,
हमारे शक्तिमान प्रभु परमेश्वर शासन कर
रहे हैं। 7 आओ, हम खुश हों और परमेश्वर
की बड़ाई करें, क्योंकि मेम्ने के विवाह का
समय आ गया और उसकी दुल्हिन ने अपने
आपको तैयार किया है। 8 पहनने के लिए
उसे अच्छे किस्म की साफ़ और चमकती
हुयी मलमल दी गयी। यह अच्छी किस्म की
मलमल सन्तों के भलाई के काम हैं।"
9 और उसने कहा, "लिखो, वे आशीषित
लोग हैं जिन्हें मेम्ने के विवाह के खाने पर
बुलाया गया है।" उसने मुझे से यह भी कहा,
"यह परमेश्वर की कही गयी सच्ची बात है।"
10 और मैंने उसके पाँवों पर गिर कर उसकी
आराधना की। उसने मुझ से कहा, "देखो,
ऐसा मत करो! क्योंकि मैं तुम्हारे और तुम्हारे
भाईयों की तरह, जिन के पास गवाही है
,एक सेवक ही हूँ। केवल परमेश्वर की
आराधना करो। क्योंकि यीशु मसीह की
गवाही भविष्यद्वाणी की आत्मा है।"

[a] **19.1** शान, इज़्ज़त

11 और मैंने स्वर्ग को खुलते हुए देखा। मैंने
एक सफ़ेद घोड़ा देखा, जिस पर कोई बैठे हुए
थे। वह विश्वासयोग्य और सच्चे कहलाते
हैं। वह धार्मिकता से इन्साफ़ और युद्ध करते
हैं। 12 उनकी आँखें आग की लपट की तरह
थीं और उनके सिर पर बहुत से ताज थे।
उनके माथे पर एक नाम लिखा हुआ था,
जिसे उनको छोड़ और कोई नहीं जानता
था। 13 वह ऐसे कपड़े पहने हुए थे जो खून
में डुबाए गए थे। उनका नाम परमेश्वर का
वचन था। 14 स्वर्ग की सेनाएँ-सफ़ेद घोड़ों पर
सफ़ेद, साफ़ और बढ़िया किस्म की मलमल
पहने हुए मेम्ने के पीछे-पीछे चली जा रही
थीं। 15 मेम्ने के मुँह से तेज़ धार वाली तलवार
निकल रही थी, जिस से वह देशों को मारते
थे। वह उनके ऊपर लोहे के राजदण्ड से
शासन करेंगे। वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर
के गुस्से की जलजलाहट से शराब के कुण्ड
में अंगूर को रौंदेंगे। 16 उनके चोगे और जाँघ
पर एक नाम लिखा हुआ था: "राजाओं के
राजा और प्रभुओं के प्रभु।"
17 फिर मैंने सूरज में एक स्वर्गदूत को खड़े
हुए देखा। उसने बुलन्द आवाज़ में चिल्लाकर
आकाश में उड़ने वाले पक्षियों से कहा,
"आओ और महान परमेश्वर के भोज में
इकट्ठे हो। 18 ताकि तुम राजाओं, प्रधानों,
ताकतवर लोगों, घोड़ों, उनके सवारों और
सब तरह के लोग-आज़ाद, गुलाम, छोटों
और बड़ों का मांस खा सको।"
19 फिर मैंने पशु और दुनिया के राजाओं
और उनकी सेनाओं को घोड़े पर बैठे
व्यक्ति और उसकी सेना से लड़ने के
लिए इकट्ठा देखा। 20 उस पशु और झूठे
भविष्यद्वक्ता को जो उसके सामने चिन्ह
दिखाता था, पकड़ लिया गया। इन चिन्हों से
वह उनको धोखा देता था, जिन्होंने पशु का
चिन्ह लिया था और जो मूरत की आराधना
करते थे। दोनों ही को गंधक से जलती हुयी
आग में ज़िन्दा डाल दिया गया। 21 बाकी
लोगों को घोड़े पर बैठे व्यक्ति के मुँह से
निकलती तलवार से खत्म कर डाला गया।
उनके मांस से सभी पक्षी तृप्त हो गए।

20 मैंने स्वर्ग से उतरते हुए एक स्वर्गदूत
को देखा, जिस के पास अथाह कुंड
की चाभी और बड़ी जंजीर थी। 2 उसने उस
पुराने अजगर को, जो कि शैतान है, एक
हज़ार साल के लिए बाँध दिया[a]। 3 उसने उसे
अथाह कुंड में ताले से बंद करके एक मुहर
लगा दी ताकि जब तक हज़ार साल न बीत
जाएँ, वह तमाम देशों के लोगों को भरमा
न सके। उसके बाद उसे थोड़ी देर के लिए
आज़ाद किया जाएगा।
4 फिर मैंने सिहासनों और उनके ऊपर बैठे
लोगों को देखा। उन्हें यह अधिकार दिया
गया कि वे लोगों का इन्साफ़ करें और सजा
दें। फिर मैंने उन लोगों की आत्माओं को देखा
जिन के सिर यीशु की गवाही देने की वजह
से और परमेश्वर के वचन के कारण धड़ से
अलग किए गए थे। उन्होंने पशु या मूरत की
पूजा नहीं की थी, न ही अपने माथे या हाथ
पर उसका चिन्ह लिया था। वे जीवित होकर
मसीह के साथ एक हज़ार साल तक शासन
करते रहे। 5 बाकी लोग तब तक जी न उठे
जब तक एक हज़ार साल खत्म न हुए। यह
पहला जी उठना था। 6 आशीषित और पवित्र
व्यक्ति वह है जो पहले जी उठने में शामिल
होगा। ऐसे लोगों पर दूसरी मौत का अधिकार

[a] **20.2** या उसके कामों पर रोक लगा दी

नहीं होगा, लेकिन वे परमेश्वर और यीशु
के याजक[a] होंगे और एक हज़ार साल तक
उनके साथ शासन करेंगे।
7 जब हज़ार साल पूरे हो जाएँगे, तब शैतान
को कैद से आज़ादी दी जाएगी। 8 वह युद्ध के
लिए गोग-मागोग और पृथ्वी के चारों तरफ़
के तमाम देशों को इकट्ठा करने के बारे में
धोखा देगा। उनकी गिनती समुद्र की रेत के
बराबर होगी। 9 वे पृथ्वी की सभी दिशाओं
से निकल कर प्रिय शहर और सन्तों के डेरे
को चारों तरफ़ से घेर लेंगे। लेकिन स्वर्ग
में से परमेश्वर की तरफ़ से आग निकलेंगी
और इस सेना को भस्म कर डालेगी। 10 और
शैतान जो उन्हें धोखे में रखता था आग और
गंधक की झील में डाला गया, जहाँ वह
पशु और झूठा भविष्यद्वक्ता थे। वे वहाँ पर
हमेशा-हमेशा के लिए दिन और रात पीड़ित
किए जाएँगे।
11 फिर मैंने एक बड़ा सफ़ेद राजासन और
उस पर बैठे हुए को देखा। उनके सामने से
पृथ्वी और आकाश भाग खड़े हुए और उनके
लिए कोई जगह नहीं मिली। 12 और मैंने उन
मरे हुओं को जो छोटे या बड़े थे, परमेश्वर के
सामने खड़े देखा और किताबें खोली गयीं।
उसके बाद जीवन की किताब खोली गयी।
मरे हुओं का इन्साफ़ उनकामों के आधार
पर हुआ जिन का बयान इन किताबों में
था। 13 समुद्र ने उन मरे हुओं को उगल दिया
जो उसमें थे। मौत और कब्र ने अपने में
समाए मृतकों को उगल दिया और प्रत्येक
का इन्साफ़ उसके कामों के अनुसार हुआ।
14 मौत तथा अधोलोक आग की झील में
डाल दिए गए। यह दूसरी मौत है। 15 जिस
किसी का नाम जीवन की किताब में लिखा
हुआ नहीं पाया गया, वह आग की झील में
डाल दिया गया।

21 फिर मैंने एक नए स्वर्ग[b] और नयी
पृथ्वी को देखा। पहला स्वर्ग और
पहली पृथ्वी खत्म हो चुके थे। और समुद्र
भी दिखायी नहीं दिया। 2 मुझ यूहन्ना ने पवित्र
शहर नए यरूशलेम को अपने दूल्हे के
लिए तैयार दुल्हन के रूप में स्वर्ग से नीचे
उतरते देखा। 3 मैंने स्वर्ग से आती हुयी एक
बुलन्द आवाज़ को सुना, “देखो, परमेश्वर
का निवास लोगों के बीच में है, और वह
उनके साथ रहेंगे, और वे उनके लोग होंगे।
परमेश्वर स्वयं उनके साथ रहेंगे और उनके
परमेश्वर होंगे।” 4 परमेश्वर उनकी आँखों
से सब आँसू पोछ डालेंगे। इसके आगे मौत,
दुख और रोना नहीं रहेगा। दर्द भी खत्म हो
जाएगा, क्योंकि पुरानी बातें बीत गयी हैं।”
5 राजासन पर बैठे हुए ने कहा, “देखो, मैं
सभी बातों को नया कर देता हूँ।” उसने मुझ
से कहा, “यह लिख लो, क्योंकि ये बातें सच्ची
और मानने के लायक हैं।”
6 उसने मुझ से कहा, “पूरा हुआ। मैं अल्फ़ा
और ओमेगा, शुरुआत और आखिर हूँ। जो
प्यासा है, उसे मैं जीवन के सोते में से मुफ़्त
दूँगा। 7 जो जीत पाए वह इन चीज़ों का वारिस
होगा। मैं उसका परमेश्वर होऊँगा और वह
मेरा बेटा होगा। 8 कायर, अविश्वासी, दुष्ट,
हत्यारों, व्यभिचारियों, जादूगरों, मूर्तिपूजकों
और झूठों का हिस्सा उस झील में होगा, जो
आग और गंधक से जलती रहती है। यही
दूसरी मौत है”।
9 सात स्वर्गदूतों में से एक, जिस के पास
आखिरी सात मुसीबतों से भरे सात कटोरे

[a] **20.6** पुरोहित [b] **21.1** आकाश

थे, उसने मेरे पास आकर मुझ से कहा,
“यहाँ आओ, मैं तुम्हें दुल्हन, अर्थात् मेम्ने की
पत्नी, दिखाऊँगा”। 10 तब वह मुझे पवित्र
आत्मा में एक बड़े और ऊँचे पहाड़ पर
ले गया और मैंने एक बड़े शहर पवित्र
यरूशलेम को स्वर्ग में से परमेश्वर की तरफ़
से परमेश्वर की महिमा से भरे हुए उतरते
देखा। 11 परमेश्वर की शान[a] उसमें थी और
उसकी रोशनी बहुत ही कीमती पत्थर अर्थात्
बिल्लौर की तरह, यशब के समान साफ़ थी।
12 इस शहर की बड़ी और ऊँची दीवारों में
बारह दरवाज़े थे। इन बारह दरवाज़ों पर
बारह स्वर्गदूत थे। इन दरवाज़ों पर इस्राएल
के बारह गोत्रों के नाम लिखे हुए थे। 13 पूर्व
दिशा के तरफ़ तीन दरवाज़े, उत्तर दिशा की
तरफ़ तीन दरवाज़े, दक्षिण दिशा की तरफ़
तीन दरवाज़े और पश्चिम दिशा की तरफ़ तीन
दरवाज़े थे। 14 इस शहर की दीवार की बारह
नींवें थीं। इन के ऊपर मेम्ने के बारह प्रेरितों
के नाम थे।

15 जो मुझ से बातचीत कर रहा था, उसके
पास शहर, दरवाज़ों और दीवार को नापने
के लिए सोने की छड़ थी। 16 शहर चौकोर
आकार का था। इसकी लम्बाई, चौड़ाई एक
ही थी। उसने उस छड़ से शहर को नापा जो
कि बारह हज़ार फ़र्लांग थी। इसकी लम्बाई,
चौड़ाई और ऊँचाई बराबर थी। 17 तब उसने
दीवार को नापा और उन्हें छ: फ़ुट मोटा
पाया[b]। 18 दीवार यशब की बनी थी और
शहर साफ़ काँच के समान शुद्ध सोने का
था। 19 उस शहर की नींव के पत्थर सब
तरह के कीमती पत्थरों से सजे थे। नींव का
पहला पत्थर यशब, दूसरा नीलम, तीसरा
स्फटिक, चौथा मरकत, 20 पाँचवां गोमेद,
छठवाँ माणिक्य, सातवाँ पीतमणि, आठवाँ
पेरोज़, नवाँ पुखराज, दसवाँ लहसनिया,
ग्यारहवाँ धूम्रकान्त और बारहवाँ चंद्रकान्त
था। 21 बारह फाटक बारह मोती के थे।
प्रत्येक फाटक एक ही मोती से बना था।
शहर की सड़क पारदर्शी शीशे की तरह शुद्ध
सोने की थी।

22 मैंने शहर में कोई मन्दिर नहीं देखा
क्योंकि सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर और
मेम्ना ही मंदिर हैं। 23 उस शहर को सूरज और
चाँद की रोशनी की ज़रूरत नहीं, क्योंकि
परमेश्वर की मौजूदगी ने उसे रोशनीमय कर
दिया है और मेम्ना उसका दीया हैं। 24 उन
राष्ट्रों के लोगों ने उद्धार पाया है वे उनकी
रोशनी में चलेंगे और दुनिया के राजा अपने
प्रताप को उसमें लाएँगे। 25 उसके फाटक
दिन के समय कभी बन्द नहीं होंगे, क्योंकि
वहाँ रात नहीं होगी। 26 वे देशों की शान और
इज़्ज़त को उसमें लाएँगे। 27 किसी भी तरह
की कोई गंदी चीज़ इस में आ नहीं पाएगी।
अशुद्ध या झूठ बोलने वाले भी नहीं, केवल
वही जिन के नाम जीवन की किताब में लिखे
हैं।

22 फिर उसने मुझे ज़िन्दगी के पानी की
एक शुद्ध नदी दिखायी। यह नदी उस
नगर के सड़क के बीचो-बीच बहती थी।
यह बिल्कुल साफ़ पानी की नदी परमेश्वर
और मेम्ने के राजासन से निकलती थी।
2 सड़क के बीचो-बीच और नदी की दोनों
तरफ़ जीवन के पेड़ थे। हर महीने इन पेड़ों में
बारह तरह के फल निकलते थे। इन पेड़ों की
पत्तियाँ देशों के स्वास्थ्य के लिए थीं। 3 अब
और कोई सज़ा नहीं रहेगी, लेकिन शहर में
मेम्ने का और परमेश्वर का राजासन होगा
और उनके सेवक उनकी सेवा करेंगे। 4 वे

[a] **21.11** महिमा [b] **21.17** यह उस इन्सानी पैमाने के मुताबिक था, जिसे स्वर्गदूत ने इस्तेमाल किया

उनकी उपस्थिति में रहेंगे और उनके माथों
पर उनका[a] नाम लिखा होगा। 5 वहाँ कभी
रात नहीं होगी। वहाँ किसी तरह की रोशनी,
दीपक या सूरज की ज़रूरत भी नहीं होगी,
क्योंकि प्रभु परमेश्वर उन्हें रोशनी देंगे। और
वे हमेशा-हमेशा के लिए शासन करेंगे।
6 और उसने कहा, "ये बातें भरोसेमन्द और
सच्ची हैं। पवित्र भविष्यद्वक्ताओं के प्रभु
परमेश्वर ने अपने सेवक के पास स्वर्गदूत
को इसलिए भेजा है, कि जल्द[b] ही होने वाली
बातों को बताए।
7 देखो, मैं अचानक आने वाला हूँ।
आशीषित व्यक्ति वह है जो इस किताब की
भविष्यद्वाणी की बातों का पालन करता है"।
8 और मुझ यूहन्ना ने ये सब बातें देखीं और
सुनी। इन सब बातों को सुनने और देखने
के बाद जिस स्वर्गदूत ने मुझे ये सब बातें
दिखायीं, उसकी उपासना करते हुए मैं उसके
पैरों पर गिर पड़ा। 9 लेकिन उसने मुझ से
कहा, "देखो, ऐसा मत करो। मैं भी तुम्हारे
साथ सेवक और भविष्यद्वक्ता भाईयों का
साथी हूँ, सिर्फ़ परमेश्वर ही को दण्डवत्
करो।"
10 फिर उसने मुझ से कहा, "इस किताब
की बातों पर मुहर मत लगाओ, क्योंकि समय
पास आ चुका है। 11 जो बेइन्साफ़ी करने
वाला है वह वैसा ही बना रहे, जो दुष्ट है वह
दुष्ट, जो धर्मी है वह धर्मी बना रहे और जो
पवित्र है वह पवित्र बना रहे।
12 देखो, मैं अचानक ही आने वाला हूँ और
लोगों के कामों के अनुसार उनको दिया जाने
वाला प्रतिफल मेरे पास है। 13 मैं अल्फ़ा और
ओमेगा हूँ, शुरुआत और अन्त हूँ, पहला
और आखिरी हूँ। 14 आशीषित वे हैं, जो
अपने कपड़ों को धोकर शुद्ध हो जाते हैं,
ताकि उन्हें जीवन के पेड़ के पास और शहर
में जाने के लिए द्वार में से जाने का हक
मिले। 15 कुत्ते, जादूगर, व्यभिचारी, हत्यारे,
मूर्ति पूजने वाले और जो झूठ से प्यार करते
और झूठी बातें[c] बनाते हैं, वे बाहर होंगे।
16 मुझ यीशु ने स्वर्गदूत को इसलिए भेजा है
ताकि कलीसियाओं में वह गवाही दे सके।
मैं दाऊद का मूल और चमकता हुआ सुबह
का तारा हूँ।
17 पवित्र आत्मा और दुल्हन का कहना है,
"आओ! जो सुनता है वह कहता है, 'आओ',
और जो प्यासा है वह भी आए। जो ऐसा
करेगा, वह जीवन का पानी मुफ़्त में पीएगा।
18 हर एक जो इस किताब की भविष्यद्वाणी
को सुनता है उसके लिए मेरी यह गवाही
हैः अगर कोई इन बातों में जोड़ेगा, तो
परमेश्वर इस किताब में लिखी विपत्तियों को
उसके लिए बढ़ाएगा। 19 जो इस किताब की
भविष्यद्वाणी में से कुछ निकाले, परमेश्वर
जीवन के पेड़, पवित्र शहर और इस किताब
में लिखी बातों में से भी उसका नाम निकाल
देंगे।
20 जो इन बातों की गवाही देते हैं, कहते
हैं, "मैं ज़रूर आऊँगा और ऐसा अचानक
होगा।" ऐसा ही हो। हाँ, प्रभु यीशु जल्दी
आइए।
21 प्रभु यीशु मसीह की असीमित कृपा तुम
सब के साथ बनी रहे। ऐसा ही हो।

[a] **22.4** यीशु का [b] **22.6** अचानक [c] **22.15** शिक्षा और सिद्धान्त

DUSTY SANDALS
All Rights Reserved. www.dustysandals.com